< गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।४२।। }

< उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।४२।। >

{ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

{ बीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।४३।। }

< उससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।४३।।
>

{ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।४४।। }

< त्रीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे अनन्तगुणी है।।४४।। >

{ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।४५।। }

< चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है।।४५।। >

{ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।४६।। }

< पंचेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है।।४६।। >

{ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदाओ पुव्वं परूविदसव्वजहण्णोगाहणाओ लद्धिअपज्जत्ताणं (च) वेत्तव्वाओ। }

< गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। ये पूर्व प्ररूपित सब जघन्य अवगाहनाएँ लब्ध्यपर्यप्तकोंकी ग्रहण करना चाहिये। अब आगे कही जानेवाली निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी और निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी समझना चाहिये। >

{ सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।४७।। }

< उससे सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।४७।। >

{ एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। }

< यहाँ गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।४८।। }

< उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।४८।। >

{ तस्सेवे त्ति णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स गहणं, अण्णेण सह पच्चासत्तीए अभावादो। केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। तस्स को पडिभागो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। केसिंचि आइरियाणमहिप्पाएण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।}

< 'उसके ही' ऐसा कहनेपर निर्वृत्त्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, और किसी दूसरेके साथ प्रत्यासत्ति नहीं है। विशेषका प्रमाण कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? आवलीका असंख्यातवाँ भाग उसका प्रतिभाग है। किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।४९।। }

< उसके ही पर्याप्तकके उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।४९।।>

{ एत्थ वि तस्सेवे त्ति वयणेण णिव्वत्तीए गहणं। केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। }

< यहाँपर भी 'उसके ही' इस निर्देशसे निर्वृत्तिपर्याप्तकका ग्रहण किया गया है। विशेषका प्रमाण कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है। >

{ सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।५०।। }

< उससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।५०।। >

{ एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एत्थ पज्जत्ते त्ति उत्ते णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स गहणमण्णस्सासंभवादो। }

< यहाँ गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है। यहाँ 'पर्याप्तक' ऐसा कहनेपर निर्वृत्तिपर्याप्तक कहना चाहिये, क्योंकि, दूसरेकी सम्भावना नहीं है। >

{ तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५१।। }

< उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५१।। >

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५२।। }

< उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५२।। >

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जयत्तस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।५३।। }

< उससे सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।५३।। >

{ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो।}

< गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५४।। }

< उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५४।। >

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५५।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५५।।
>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।५६।।
}

< उसके सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।५६।। >

{ को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार क्या है? गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५७।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५७।।
>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।५८।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।५८।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।५९।। }

< उससे विशेष सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। >

{ को गुणगारो? आवलियाए ** (प्रतिषु पलिदोवमस्स) असंखेज्जदिभागो।}

< गुणकार क्या है? गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६०।। }

< उसके ही निर्वृत्तिअपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६०।। >

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६१।।
}

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६१।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है। >

[बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।६२।।
}

< उससे बादरवायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।६२।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६३।।
}

< उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६३।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

<   विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।   >

{   तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६४।।   }

<   उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६४।।>

{   केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

<   विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।   >

{   बादरतेवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।६५।।   }

<   उससे बादरतेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।६५।।   >

{   को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।   }

<   गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।   >

{   तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६६।।   }

<   उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६६।।>

{   केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

<	विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।	>

{	तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६७।। }

<	उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६७।।>

{	केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो।	}

<	विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।	>

{	बादरतेआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।६८।।	}

<	उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।६८।।	>

{	को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।	}

<	गुणकार कितना है? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।	>

{	तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।६९।।
}

<	उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।६९।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७०।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।७०।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स** (प्रतिषु 'णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स' इति पाठः।) जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।७१।। }

< उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।७१।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।}

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७२।।
}

< उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।७२।।>

{ केत्तियमेत्तेण? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण। }

< कितने मात्रसे वह अधिक है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७३।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।७३।।>

{ केत्तियमेत्तेण? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । }

< कितने मात्रसे वह अधिक है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है। >

{ बादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।७४।। }

< उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।७४।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७५।। }

< उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है।।७५।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७६।। }

< उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।७६।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।७७।।}

< उससे निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।७७।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७८।। }

< उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है।।७८।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया।।७९।। }

< उससे उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है।।७९।।>

{ केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। }

< विशेष कितना है? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। >

{ बादरवणप्फदिकाइपत्तेयसरीरयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।८०।। }

< उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।८०।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। >

{ बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।।८१।।}

< उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।८१।। >

{ को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। }

<	गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।	>

{	तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ** (प्रतिषु ' असंखेज्जगुणा' इति पाठः।) ।।८१।।	}

<	उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।८१।।	>

{	को गुणगारो? संखेज्जा समया।	}

<	गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है।	>

{	चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।८३।।	}

<	उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।८३।।	>

{	को गुणगारो? संखेज्जा समया।	}

<	गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है।	>

{	पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।८४।।	}

<	उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।।८४।।	>

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।८५।।

}

< उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८५।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।८६।। }

< उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८६।।>

{ (को गुणगारो? संखेज्जा समया।) }

< (गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है।) >

{ बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।८७।।

}

< उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८७।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।८८।। }

< उससे बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८८।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।८९।। }

< उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८९।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।९०।। }

< उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।९०।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।९१।।
}

< उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।९१।।

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।९२।। }

< उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।९२।। >

{ को गुणगारो? संखेज्जा समया। }

< गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है। >

{ बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।९३।। }

<	उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।८१।।	>

{	को गुणगारो? संखेज्जा समया।	}

<	गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है।	>

{	पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।।९४।।
}

<	उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।।९४।।	>

{	को गुणगारो? संखेज्जा समया।	}

<	गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है।	>

{	संपधि पुव्वपरूविदअप्पाबहुगम्मि गुणगारपमाणपरूवणट्ठं उवरिमसुत्ताणि भणदि --
}

<	अब पहले कहे गये अल्पबहुत्वमें गुणकारोंके प्रमाणको बतलानेके लिये आगेके सूत्र कहते	हैं -- >

{	सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो।।९५।।
}

< एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है।।९५।। >

{ सुहुमादो अण्णस्स सुहुमस्स ओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति जत्थ जत्थ भणिदं तत्थ तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो। }

{ एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी है, ऐसा जहाँ जहाँ कहा गया है वहाँ वहाँ आवलीका असंख्यातवाँ भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये। }

{ सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।।९६।। }

< सूक्ष्मसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।।९६।। >

{ सुहुमेंदियओगाहणादो जत्थ बादरोगाहणमसंखेज्जगुणमिदि भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेत्तव्वं। }

< सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहनासे जहाँ बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही गयी है, वहाँ पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। >

{ बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो।।९७।।
}

< बादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है।।९७।।
>

{ बादरोगाहणादो जत्थ सुहुमेंदियओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो।}

< बादरकी अवगाहनासे जहां सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही गयी है वहाँ आवलीका असंख्यातवाँ भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। >

{ बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।।९८।। }

< बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।।९८।। >

{ एत्थ बादरा त्ति उत्ते जेण बादरणामकम्मोदइल्लाणं जीवाणं गहणं तेण बीइंदियादीणं पि गहणं होदि। बादरओगाहणादो अण्णा बादरओगाहणा जत्थ असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो। }

< यहाँ सूत्रमें 'बादरसे' ऐसा कहनेपर चूँकि बादर नामकर्मके उदययुक्त जीवोंका ग्रहण है, अतः उससे द्वीन्द्रियादिक जीवोंका भी ग्रहण होता है। बादरकी अवगाहनासे जहाँ दूसरे बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है वहाँ पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार कहना चाहिये। >

{ बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया।।९९।। }

< बादरसे दूसरे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है।।९९।। >

{ बीइंदियादिणिव्वत्तिअपज्जत्तएसु तेसिं पज्जत्तएसु च ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया त्ति घेत्तव्वो। पुव्विल्लसुत्तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमिदं सुत्तमारद्धं, तेण ण दोण्णं सुत्ताणं विरोहो। एदे एत्थ गुणगारा होंति त्ति कधं णव्वदे? एदम्हादो

चेव सुत्तादो णव्वदे। ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो। णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणमोगाहणपरूवणट्ठं खेत्ताणुयोगद्दारे परूविज्जमाणे जीवसमासाणमोगाहणपरूवणा किमट्ठ** (ता प्रतौ 'परूवणा (कीरदे) किमट्ठ--' इति पाठः।) मेत्थ परूविदा? एत्थ परिहारो उच्चदे। एसो ओगाहणप्पाबहुअदंडओ जीवसमासाणं ण परूविदो, अप्पाबहुअस्स असंबद्धप्पसंगादो। किंतु अट्ठण्णं पि कम्माणं जीवसमासेहिंतो अभेदेण लद्धजीवसमासववएसाणमोगाहणप्पाबहुअदंडओ एसो परूविदो त्ति। किमट्ठमेसा अप्पाबहुगपरूवणा कदा? समुग्घादेण विणा णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणं सत्थाणोगाहणाणं जीवसमासभेदेण भिण्णाणं माहप्पपरूवणट्ठं कदा, णाणावरणादीणमजहण्ण-अणुक्कस्ससत्थाणखेत्तट्ठाणपरूवणट्ठं वा। एवमप्पाबहुगं सगंतोक्खित्तगुणगारहियारं समत्तं। एवं वेयणखेत्तविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं। }

< द्वीन्द्रिय आदिक निर्वृत्त्यपर्याप्तकों और उनके पर्याप्तकोंमें अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। पूर्व सूत्रसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारके प्राप्त होनेपर उसका प्रतिषेध करनेके लिए यह सूत्र रचा गया है। इसीलिये उपर्युक्त दोनों सूत्रोंमें कोई विरोध नहीं है।

शंका -- ये यहाँ गुणकार होते हैं, ऐसा कैसे जाना जाता है?

समाधान -- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है। कारण कि एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है।

शंका -- ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी अवगाहनाके प्ररूपणार्थ क्षेत्रानुयोगद्वारकी प्ररूपणा करते समय जीवसमासोंकी अवगाहनाकी प्ररूपणा यहाँ किसलिये की गयी है?

समाधान -- यहाँ इस शंकाका उत्तर कहते हैं -- यह अवगाहना सम्बन्धी अल्पबहुत्वदण्डक जीवसमासोंका नहीं कहा गया है, क्योंकि, वैसा करनेसे उक्त अल्पबहुत्वके असंगत होनेका प्रसंग आता है। किन्तु यह जीवसमासोंसे अभिन्न होनेके कारण जीवसमास संज्ञाको प्राप्त हुए आठों कर्मोंकी ही अवगाहनाका अल्पबहुत्वदण्डक कहा गया है।

शंका -- यह अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये कही गयी है?

समाधान -- जीवसमासोंके भेदसे भेदको प्राप्त हुए ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोकी समुद्‌घातरहित स्वस्थान अवगाहनाओंके माहात्म्यको बतलानेके लिये उक्त प्ररूपणा की गयी है। अथवा, ज्ञानावरणादिक कर्मोके अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्वस्थान क्षेत्रस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उपर्युक्त प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार अपने भीतर गुणकार अधिकारको रखनेवाला अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इस प्रकार वेदनाक्षेत्रविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ। >

{ एदाओ सोलस उवरिमाओ ओगाहणाओ तिसमयआहारय-तिसमयतब्भवत्थलद्धिअपज्जत्तयाणं जहण्णाओ घेत्तव्वाओ ** (ता प्रतौ 'घेत्तव्वाओ' इति पाठः। अवरमपुण्णं पढमं सोलं पुण पढम-बिदिय-तदियोली। पुण्णिदर-पुण्णियाणं जहण्णमुक्कस्समुक्कस्सं।। गो. जी. ९९.) आदिप्पहुडि सत्तारस ओगाहणाओ पदेसुत्तरकमेण णिरंतरं वड्ढावेदव्वाओ। पुणो जत्थ जिस्से ओगाहणा समप्पदि तक्काले ठविदोगाहणसलागासु रूवमवणेदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणाहि सह ** (ता प्रतौ 'हेट्ठिल्लोगाहणादि सह' इति पाठः।) हेट्ठा णिरंतरमागंतूण उवरि गमणाभावादो। पुणो जत्थ जत्थ जहण्णोगाहणाओ पदंति तत्थ तत्थ पुव्वट्ठविदसलागासु रूवं पक्खिविदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणवियप्पसलागासु एदस्से ** (एदस्स जहण्णोगाहणसलागाए अभावादो एवं सव्वत्थ जोजेयव्व ---- कस्सोगाहणात्ति सेसं जाणिय वत्तव्वं) णत्थि त्ति **(प्रतिषु ' एदिस्से णात्ति', ता प्रतौ 'एदिस्से त्ति' इति पाठः।)। सेसं जाणिय वत्तव्वं। }

< ये उपरिम सोलह अवगाहनाएँ त्रिसमयवर्ती आहारक त्रिसमयवर्ती तद्‌भवस्थ लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंकी जघन्य ग्रहण करना चाहिये। आदिसे लेकर सत्रह अवगाहनाओंकको प्रदेश अधिक क्रमसे निरन्तर बढ़ाना चाहिये। फिर जहाँ जिसकी अवगाहना समाप्त होती है उस कालमें स्थापित अवगाहनशलाकाओंमेंसे एक रूपको कम करना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाओंके साथ नीचे निरन्तर आकर ऊपर गमनका अभाव है। फिर जहाँ जहाँ जघन्य अवगाहनाएँ पड़ती हैं वहाँ वहाँ पूर्व स्थापित शलाकाओंमेंसे एक रूपको मिलाना चाहिये,

क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाके विकल्पभूत शलाकाओंमें इसकी शलाका नहीं है। शेष जानकर कहना चाहिये। >

{ एदाओ एक्कारस उक्कस्सोगाहणाओ उवरिमाओ णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्साओ। एदाओ कस्स हवंति ** (म प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'हवदि', ता प्रतौ 'हवदि (होंति)' इति पाठः।) से काले पज्जत्तो होहदि त्ति ट्ठिदस्स होंति। लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा किण्ण गहिदा** (ता प्रतौ 'लहिदा' इति पाठः।) ? ण, लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणादो णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए विसेसाहियभावेण विणा असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। हेट्ठिमाओ सुहुमणिगोदाओ ** (ता प्रतौ 'णिगोदाओ (णं)' इति पाठः।)णिव्वत्तिपरंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं घेत्तव्वाओ। ताओ कत्थ होंति त्ति उत्ते पज्जत्तयदपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णउववाद-एयंताणुवड्ढिजोगेहि आगंतूण जहण्णपरिणामजोगे जहण्णोगाहणाए च वट्टमाणस्स ** (ता प्रतौ 'वट्टामणस्स' इति पाठः।) एक्कारस वि होंति। पुणो णिव्वत्तिपज्जत्ताणं हेट्ठिमाओ एक्कारस उक्कस्सओगाहणाओ उक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सोगाहणाए ** (ता प्रतौ 'ओगाहणाओ' इति पाठः।) वट्टमाणस्स परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होंति। एदाओ ओगाहणाओ अप्पप्पणो जहण्णादो उक्कस्साओ विसेसाहियाओ होंति। सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणप्पहुडि सव्वजहण्णुक्कस्सोगाहणाओ जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तजहण्णोगाहणं पावेंति ताव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो। बीइंदियादिपज्जत्ताणं जहण्णोगाहणाओ अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तीयाओ ** (अ प्रतौ 'असंखेज्जदिभागमेत्तीयो' इति पाठः।) । बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा अणुंधरिम्हि होदि। तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा कुथुम्हि होदि। चदुरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा काणमच्छियाए। पंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा सित्थमच्छम्मि होदि ** (वि-ति-च-पपुण्णजहण्णं अणुंधरी-कुंथु-काणमच्छीसु। सिच्छयमच्छे विंदंगुलसंखं संखगुणिदकमा।। गो. जी.. ९६.)। तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा तिण्णिगाउअप्पमाणा। सा कम्हि होदि? गोम्हिम्हि। चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा चत्तारिगाउप्पमाणा। सा कत्थ? भमरम्मि। बीइंदियस्स पज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा बारस जोयणाणि। सा कत्थ? संखम्मि। एइंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणाणि। सा कत्थ? जोयणसहस्सायाम-जोयणविक्खम्भपउमम्मि। पंचेंदियउक्कस्सोगाहणा

संखेज्जाणि जोयणसहस्साणि। सा कत्थ? पंचजोयणदुस्सेह-तदद्धविक्खंभ-जोयणसहस्सायाममच्छम्मि ** (साहियसहस्समेकं वारं कोसूणमेकमेक्कं च। जोयणसहस्सदीहं पम्मे वियले महामच्छे।। गो. जी. ९५.)। एदेसिमपज्जत्ताणं तप्पडिभागो होदि। }

<	ये उपरिम ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनाएँ निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट हैं।

शंका -- ये किसके होती हैं?

समाधान -- जो जीव अनन्तर कालमें पर्याप्त होनेवाला है उसके वे अवगाहनाएँ होती हैं।

शंका -- लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाको क्यों नहीं ग्रहण किया गया?

समाधान -- नहीं, क्योंकि लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनासे निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिकताके विना असंख्यातगुणी पायी जाती है।

सूक्ष्म निगोदसे लेकर अधस्तन (ग्यारह जघन्य अवगाहनाएँ) निर्वृत्तिपरंपरा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवोंकी ग्रहण करना चाहिये।

शंका -- वे अवगाहनाएँ कहाँपर होती हैं?

समाधान -- इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान है तथा जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगसे आकर जघन्य परिणामयोग व जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला है उसके वे ग्यारहही अवगाहनाएँ होती हैं।

निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी अधस्तन ग्यारह अवगाहनाएँ उत्कृष्ट अवगाहनामें वर्तमान व परम्परा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उत्कृष्ट योगवाले जीवके होती हैं। ये अवगाहनाएँ अपने अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक होती हैं।

सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनासे लेकर सब जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहनाएँ जब तक बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहनाको प्राप्त होती हैं तब तक अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र रहती हैं। द्वीन्द्रियादिक पर्याप्त जीवोंकी जघन्य अवगाहनाएँ अंगुलके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना अनुन्धरीके होती है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कुन्थुके होती है। चतुरिन्द्रिय

पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कानमक्षिकाके होती है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सिक्थ मत्स्यके होती है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गव्यूति प्रमाण है। वह किसके होती है? वह गोम्हीके होती है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना चार गव्यूति प्रमाण होती है। वह कहाँपर होती है? वह भ्रमरके होती है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन प्रमाण है। वह कहाँपर होती है? वह शंखके होती है। एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात योजन प्रमाण है। वह कहाँ होती है? वह एक हजार योजन आयाम और एक हजार योजन विस्तारवाले पद्मके होती है। पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात हजार योजन है। वह कहाँ होती है? वह पाँचसौ प्रमाण उत्सेध, इससे आधे विस्तार और एक हजार योजन आयामसे युक्त मत्स्यके होती है। इनके अपर्याप्तोंकी अवगाहनाएँ उक्त प्रमाणके प्रतिभाग मात्र होती हैं।   >

*****